# ISWK SHARING KNOWLEDGE

## Class IX
## Subject- Hindi (Second Language)

## Topic- अनुच्छेद-लेखन
## (Paragraph Writing)

By – Kailash Patro

©ISWK

हिंदी साहित्य की महत्त्वपूर्ण विधाओं में एक है-अनुच्छेद लेखन। यह अपने मन के भाव-विचार अभिव्यक्त करने की विशिष्ट विधा है जिसके माध्यम से हम संबंधित विचारों को 'गागर में सागर' की तरह व्यक्त करते हैं। अनुच्छेद निबंध की तुलना में आकार में छोटा होता है, पर यह अपने में पूर्णता समाहित किए रहता है। इस विधा में बात को घुमा-फिराकर कहने के बजाय सीधे-सीधे मुख्य बिंदु पर आ जाते हैं। इसमें भूमिका और उपसंहार दोनों को अधिक महत्त्व नहीं दिया जाता है। इसी तरह कहावतों, सूक्तियों और अनावश्यक बातों से भी बचने का प्रयास किया जाता है। यहाँ यह भी ध्यान रखना चाहिए कि अनावश्यक बातों को छोड़ते-छोड़ते हम मुख्य अंश को ही न छोड़ जाएँ और विषय आधा-अधूरा-सा लगने लगे।

अनुच्छेद लेखन करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए-

- विषय का आरंभ मुख्य विषय से करना चाहिए।
- वाक्य छोटे-छोटे, सरल तथा परस्पर संबद्ध होने चाहिए।
- भाषा में जटिलता नहीं होनी चाहिए।
- पुनरुक्ति दोष से बचने का प्रयास करना चाहिए।
- विषय के संबंध में क्या, क्यों, कैसे प्रश्नों के उत्तर इसी क्रम में देकर लिखने का प्रयास करना चाहिए।

निबंध की भाँति ही अनुच्छेदों को मुख्यतया चार भागों में विभाजित कर सकते हैं

- वर्णनात्मक अनुच्छेद
- भावात्मक अनुच्छेद
- विचारात्मक अनुच्छेद
- विवरणात्मक अनुच्छेद

## संकेत बिंदु-

- सत्संग क्या है
- सत्संग दुर्लभ
- सत्संग के लाभ

सत्संग का अर्थ है अच्छे लोगों अर्थात् सज्जनों का साथ। सज्जनों के साथ रहना, उनकी बातें सुनना, उन्हें जीवन में उतारना ही सत्संग कहलाता है। सत्संग के कारण हमारे जीवन में परिवर्तन होने लगते हैं। इस संसार में सत्संग दुर्लभ माना जाता है। जिस पर ईश्वर की कृपा होती है, उसी को सत्संग का अवसर मिल पाता है। इससे हमारे मन, बुद्धि और मस्तिष्क का विकास होता है। इससे हमारे सोच-विचार और आचरण में बदलाव आने लगता है। व्यक्ति सत्संग के बिना विवेकवान नहीं हो सकता है। तभी तो तुलसीदासजी ने कहा है-बिनु सत्संग विवेक न होई।

मनुष्य को जीने के लिए जिस प्रकार हवा और पानी की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार जीवन में उत्थान-विकास और विवेकवान बनने के लिए सत्संग आवश्यक है। सत्संग के विषय में कवि रहीम पहले ही कह चुके हैं-'जैसी संगति कीजिए, तैसोई फल दीन।' अर्थात् संगति के अनुसार मनुष्य को फल मिलता है। स्वाति नक्षत्र की एक बूँद केले के पत्ते पर पड़कर कपूर, हाथी के मस्तक पर पड़कर गजमौक्तिक और सीप में पड़कर मोती बन जाती है। अतः हमें भी सत्संग अवश्य करना चाहिए।

संकेत बिंदु-

- जीवन निर्माण का काल
- विद्यार्थी के लक्षण
- विद्यार्थी के कर्तव्य

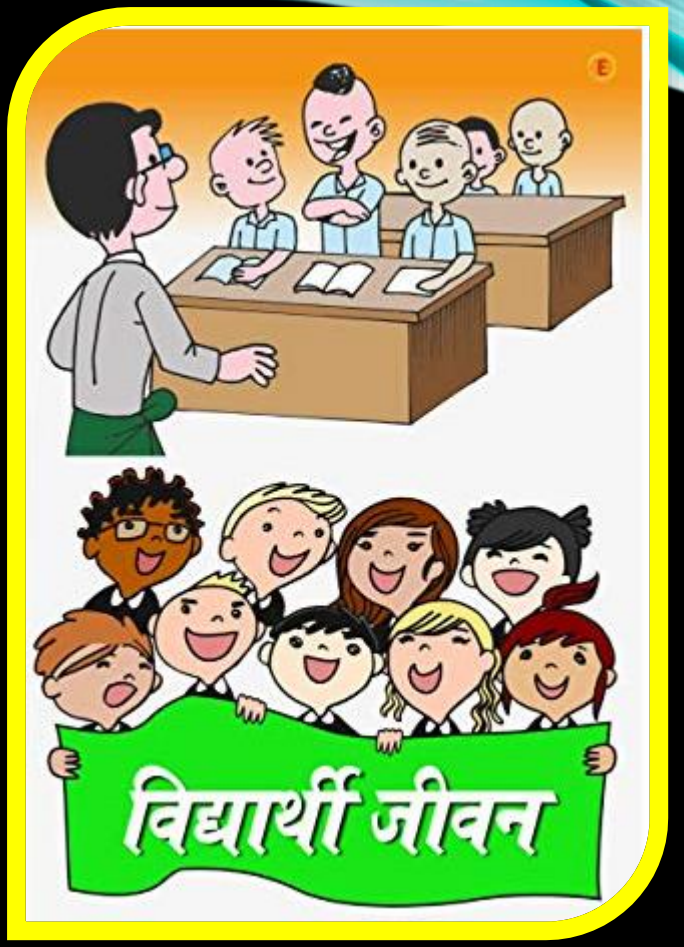


हमारे ऋषि-मुनियों ने मानव जीवन को चार भागों में बाँट दिया था। इनमें जीवन के जिस आरंभिक पच्चीस वर्षों को 'ब्रह्मचर्य' के नाम से जाना जाता था, उसी को आज विद्यार्थी जीवन कहने में कोई विसंगति न होगी। इसी काल में बालक तरह-तरह की विद्याएँ, संस्कार और सदाचार की बातें सीखता है, अतः यह जीवन-निर्माण का काल होता है। इस समय बालक जो कुछ भी सीखता है, चाहे अच्छा या बुरा, उसका प्रभाव जीवन भर रहता है। इन्हीं गुणों पर व्यक्ति का भविष्य निर्भर करता है। विद्यार्थी जीवन विद्यार्जन का काल होता है।

इसके लिए नम्रता, जिज्ञासा, सेवा तथा कर्तव्य भावना आवश्यक है। इस समय उसे कौए-सी चेष्टा, बगुले-सा ध्यान, कुत्ते-सी निद्रा, कम भोजन करने वाला तथा घर-परिवार की मोहमाया से दूर रहने वाला होना चाहिए। जो विदयार्थी आलस्य करते हैं या असंयमित आचरण के आदी हो जाते हैं, वे सफलता से दूर रह जाते हैं। अतः विदयार्थियों को विनम्र, जिज्ञासु, संयमी, परिश्रमी तथा अध्यवसायी बनना चाहिए। उसके जीवन में सादगी और विचारों की महानता होने पर वह उज्ज्वल भविष्य का निर्माण करता है।

# महानगरीय जीवन-एक वरदान या अभिशाप

संकेत बिंदु-

- शहरों की ओर बढ़ते कदम
- दिवास्वप्न
- वरदान रूप
- महानगरीय जीवन-एक अभिशाप

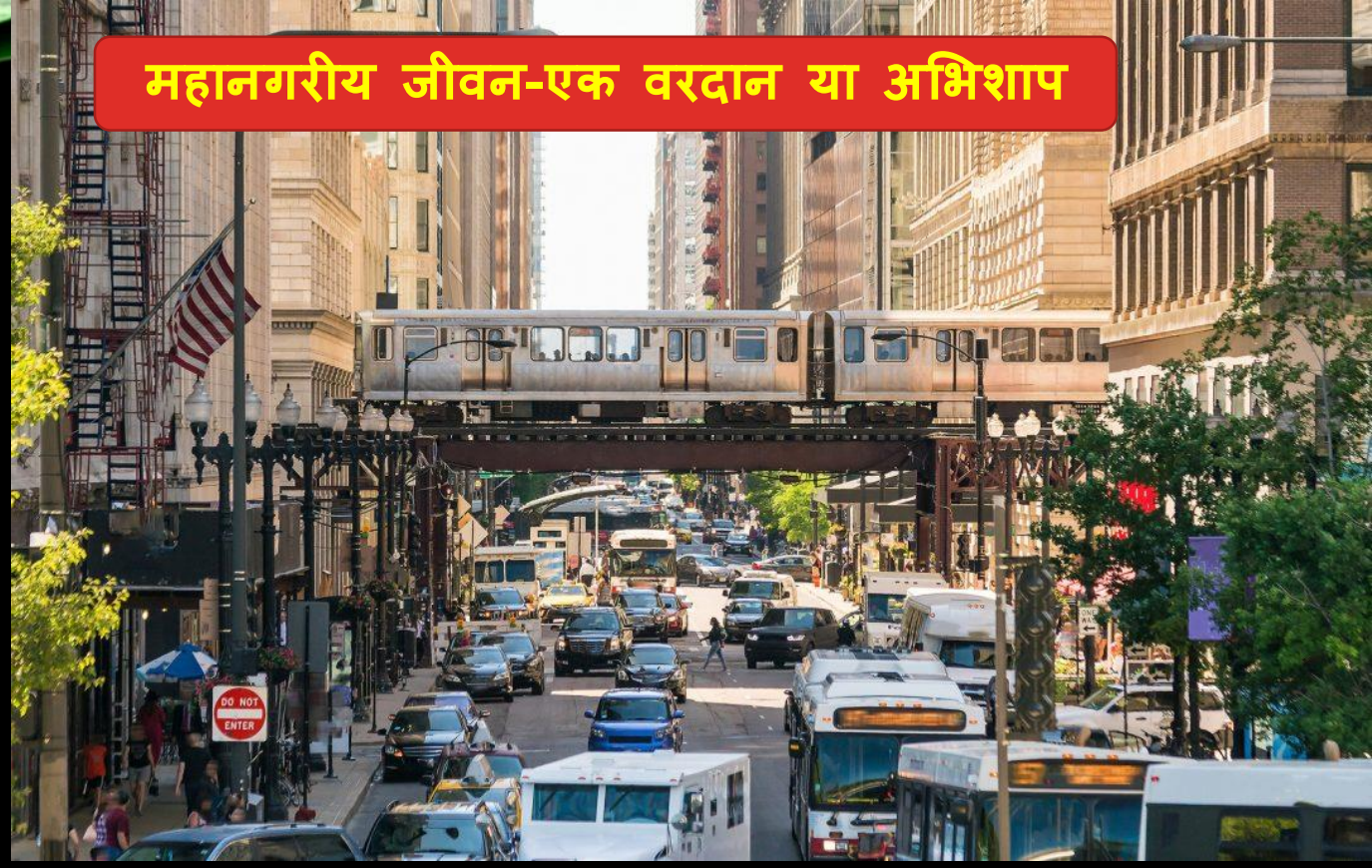


आदिकाल में जंगलों में रहने वाले मनुष्य ने ज्यों-ज्यों सभ्यता की दिशा में कदम बढ़ाए, त्यों-त्यों उसकी आवश्यकताएँ बढ़ती गईं। उसे इन आवश्यकताओं की पूर्ति का केंद्र शहर प्रतीत हुए और उसने शहरों की ओर कदम बढ़ा दिए। महानगरों का अपना विशेष आकर्षण होता है। यही चमक-दमक गाँवों में या छोटे शहरों में रहने वालों को विशेष रूप से आकर्षित करती है। उसे यहाँ सब कुछ आसानी से मिलता प्रतीत होता है। इसी दिवास्वप्न को देखते हुए उसके कदम महानगरों की ओर बढ़े चले आते हैं। इसके अलावा वह रोज़गार और बेहतर जीवन जीने की लालसा में इधर चला आता है।

धनी वर्ग के लिए महानगर किसी वरदान से कम नहीं। उनके कारोबार यहाँ फलते-फूलते हैं। कार, ए.सी., अच्छी सड़कें, विलासिता की वस्तुएँ, चौबीसों घंटे साथ निभाने वाली बिजली यहाँ जीवन को स्वर्गिक आनंद देती हैं। इसके विपरीत ग़रीब आदमी का जीवन यहाँ दयनीय है। रहने को मलिन स्थानों पर झुग्गियाँ, चारों ओर फैली गंदगी, मिलावटी वस्तुएँ, दूषित हवा, प्रदूषित पानी यहाँ के जीवन को नारकीय बना देते हैं। ऐसा जीवन किसी अभिशाप से कम नहीं।

संकेत बिंदु-

- अनुशासन का अभिप्राय
- अनुशासन का महत्त्व
- सफलता के लिए अनुशासन आवश्यक

अनुशासन का अभिप्राय है-शासन (नियम) के पीछे चलना। अर्थात् विद्वानों तथा समाज के माननीय लोगों द्वारा बनाए गए नैतिक एवं सामाजिक नियमों का पालन करते हुए जीना। जीवन में अनुशासन का बहुत महत्त्व है। अनुशासन जीने की कला है। यह व्यक्ति का वह मार्गदर्शक है जो व्यक्ति को सुपथ पर चलाते हुए लक्ष्य की ओर ले जाता है। अनुशासन का महत्त्व हम इस उदाहरण से समझ सकते हैं कि अंकुश की सहायता से महावत पागल हाथी को भी वश में कर लेता है और मनचाहे काम करवाता है। यदि महावत के पास अंकुश न हो तो पागल हाथी बेकाबू होकर विध्वंस बन जाता है।

वास्तव में अनुशासनहीन जीवन नाविक विहीन नाव के समान होता है। नाविक नाव को मध्य धारा से धीरे-धीरे किनारे लगा लेता है परंतु नाविक विहीन नाव किसी चट्टान या पत्थर से टकराकर चकनाचूर हो जाती है। अनुशासनहीन व्यक्ति न अपना भला कर पाता है और न समाज या राष्ट्र का। अनुशासनहीन व्यक्ति सफलता से कोसों दूर रह जाता है। अतः जीवन को आनंदमय बनाने के लिए अनुशासन में रहना अत्यावश्यक है।

# बदलती दुनिया में पीछे छूटते जीवन मूल्य

संकेत बिंदु-

- संसार परिवर्तनशील
- बदलाव का प्रभाव
- खोते नैतिक मूल्य

यह संसार परिवर्तनशील है। यह पल-पल परिवर्तित हो रहा है। इस परिवर्तन के कारण कल तक जो नया था, वह आज पुराना हो जाता है। कुछ ही वर्षों के बाद दुनिया का बदला रूप नज़र आने लगता है। इस परिवर्तन से हमारे जीवन मूल्य भी अछूते नहीं हैं। इन जीवन मूल्यों में बदलाव आता जा रहा है। इससे व्यक्ति का दृष्टिकोण बदल रहा है। यह बदलाव व्यक्ति के व्यवहार में स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। विज्ञान की खोजों के कारण हर क्षेत्र में बदलाव आ गया है। पैदल और बैलगाड़ी पर सफ़र करने वाला मनुष्य वातानुकूलित रेलगाड़ियों और तीव्रगामी विमानों से सफ़र कर रहा है। हरकारे और कबूतरों से संदेश भेजने वाला मनुष्य आज टेलीफ़ोन और तार की दुनिया से भी आगे आकर मोबाइल फ़ोन पर आमने-सामने बातें करने लगा है।

दुर्भाग्य से हमारे जीवन मूल्य इस प्रगति में पीछे छूटते गए। कल तक दूसरों के लिए त्याग करने वाला, अपना सर्वस्व दान देनेवाला मनुष्य आज दूसरों का माल छीनकर अपना कर लेना चाहता है। परोपकार, उदारता, मित्रता, परदुखकातरता, सहानुभूति, दया, क्षमा, साहस जैसे मूल्य जाने कहाँ छूटते जा रहे हैं। हम स्वार्थी और आत्मकेंद्रित होते जा रहे हैं।

संकेत बिंदु-.

- आत्मनिर्भरता क्या है
- आत्मनिर्भरता के लाभ
- आत्मनिर्भरता से जुड़ी सावधानियाँ

आत्मनिर्भरता दो शब्दों 'आत्म' और निर्भरता से बना है, जिसका अर्थ है-स्वयं पर निर्भर रहना। अर्थात् अपने कार्यों और आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए दूसरे का मुँह न ताकना। आत्मनिर्भरता उत्तम कोटि का मानवीय गुण है। इससे व्यक्ति कर्म करने लिए स्वतः प्रेरित होता है। व्यक्ति को अपनी शक्ति, योग्यता और कार्यक्षमता पर पूरा विश्वास होता है। इसी बल पर व्यक्ति उत्साहित होकर पूरी लगन से काम करता है और सफलता का वरण करता है। आत्मनिर्भरता व्यक्ति के लिए स्वतः प्रेरणा का कार्य करती है।

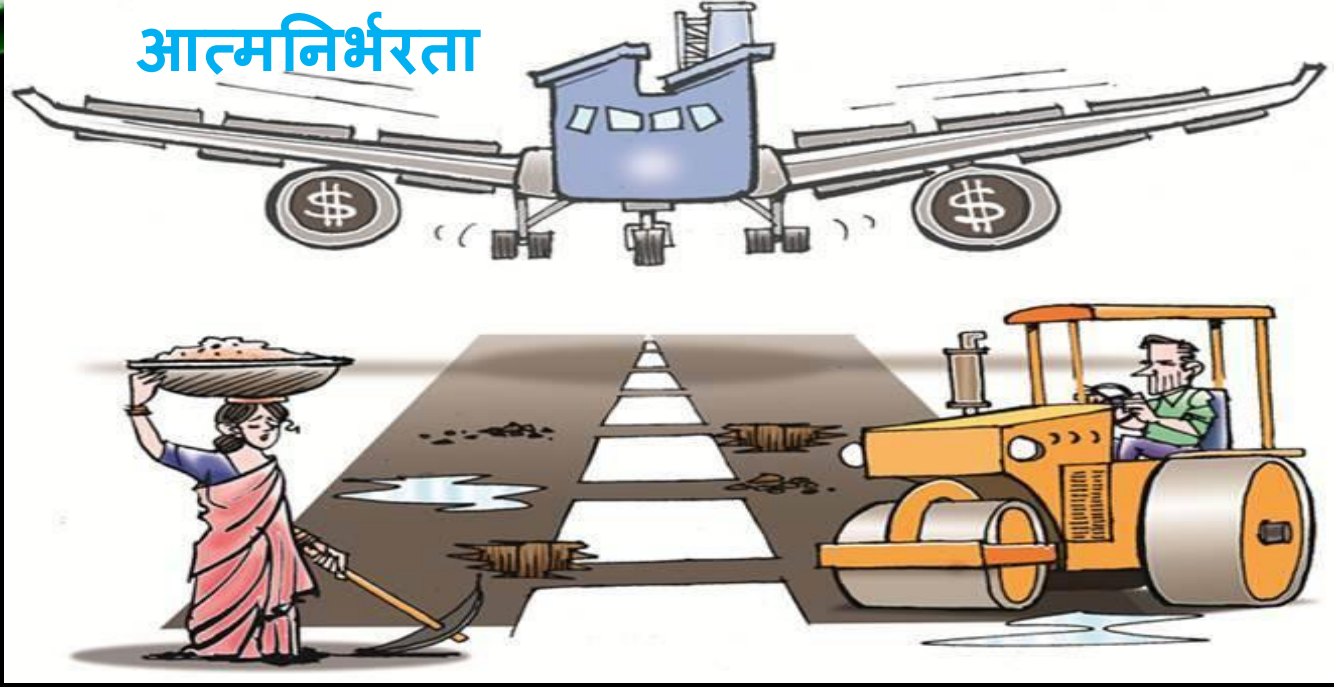


यह प्रेरणा व्यक्ति को निरंतर आगे ही आगे ले जाती है। इससे व्यक्ति में निराशा या हीनता नहीं आने पाती है। आगे बढ़ते रहने से हम दूसरों के लिए आदर्श और अनुकरणीय बन जाते हैं। यहाँ एक बात का अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि हम अति उत्साहित होकर अति आत्मविश्वासी न बन जाएँ क्योंकि इससे हमारे कदम ग़लत दिशा में उठ सकते हैं। अच्छा हो कि कोई कदम उठाने से पूर्व हम अपनी कार्य क्षमता का आकलन कर लें, इससे हम असफलता का शिकार होने से बच जाएँगे, पर हमें हर परिस्थिति में आत्म निर्भर बनना चाहिए।

# अतिथि देवो भवः

## संकेत बिंदु-

- अतिथि भगवान का रूप
- अतिथि कौन
- पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव

भारतीय संस्कृति की ऐसी अनेक विशेषताएँ हैं जो इसे अन्य संस्कृतियों से विशिष्ट बनाती है। इनमें एक है अतिथि को देवता मानने की सोच। इस धारणा के कारण लोग अपने सामर्थ्य के अनुसार अतिथि का स्वागत करते हैं और उसे संतुष्ट रखने का प्रयास करते हैं। अतिथि कौन होता है? अतिथि वह व्यक्ति होता है जिसके आने की कोई तिथि नहीं होती है। वह अचानक आ धमकता है, बिना किसी पूर्व सूचना के। इस स्थिति में जब हम अतिथि का भरपूर स्वागत-सत्कार करते हैं तो अतिथि पर ही नहीं समाज पर भी इसका सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

भारतीय संस्कृति की परंपरानुसार अतिथि का स्वागत-सत्कार करना हर भारतीय का दायित्व बनता है। हमें इस परंपरा का निर्वाह करना ही चाहिए। आजकल टूटते परिवार, बढ़ती महँगाई, समयाभाव, काम-काज की अधिकता और भागमभाग की ज़िंदगी के बीच अतिथि का सत्कार करना मुश्किल होता जा रहा है। इसके अलावा पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव के कारण हम इसे भूलते जा रहे हैं। कुछ भी हो पर हमें अतिथि सत्कार की परंपरा को बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए।

## संकेत बिंदु-

- महँगाई का अर्थ
- महँगाई वृद्धि के कारण
- महँगाई का प्रभाव

दैनिक उपयोग की वस्तुओं के मूल्य का निरंतर बढ़ते जाना ही महँगाई है। महँगाई की यह वृद्धि आम आदमी की जेब पर भारी पड़ने लगती है। ग़रीब एवं मज़दूर के लिए दो जून की रोटी जुटाना भी मुश्किल हो जाता है, किंतु महँगाई के कारण वस्तुओं के दाम बढ़ते जाते हैं। महँगाई के कारणों में जनसंख्या वृद्धि प्रमुख है। इस वृद्धि के कारण खाद्यान्न और वस्तुओं का उत्पादन जितना बढ़ाया जाता है, उससे अधिक जनसंख्या बढ़ जाती है।

## महँगाई की समस्या या जान लेवा महँगाई

ऐसे में एक अनार सौ बीमार वाली स्थिति में महँगाई बढ़ना तय हो जाती है। इसका फ़ायदा कुछ बड़े व्यापारी, साहूकार आदि उठाते हैं। वे आवश्यक वस्तुओं की जमाखोरी शुरू करते हैं और उनका कृत्रिम अभाव दिखाते हैं। इधर लोग उन वस्तुओं के लिए परेशान होते हैं तो व्यापारी इन्हें ऊँचे दाम पर बेचते हैं। बढ़ती महँगाई के कारण लोगों में आक्रोश, छीना-झपटी की घटनाएँ, लूट-खसोट तथा अन्य अपराध बढ़ते हैं जिससे सामाजिक समरसता में कमी आती है। इससे लोग संघर्ष के लिए विवश हो जाते हैं।

धन्यवाद ...
घर में रहें,
सुरक्षित रहें और
स्वस्थ रहें ...